Vol 6 Issue 1 Oct 2016
ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

ISSN: 2249-894X Impact Factor :3.8014(UIF) Volume - 6 | Issue - 1 | October - 2016

Review Of Research

'आंध' आदिवासी लोकसाहित्य के विविध रुप

प्रा.विश्वनाथ महादू देशमूख
हिंदी विभाग, राजाराम महाविद्यालय, कोल्हापुर।

प्रस्तावना:

भारतीय परंपरा और संस्कृति की दृष्टि से लोकसाहित्य का स्थान ऊँचा है। भारत में कई जन–जातियाँ हैं, जिनके लोकसाहित्य के संबंध में आज भी अनेक जिज्ञासाएँ निर्माण होती हैं। भारत देश में आदिवासियों की संख्या संसार के अन्य देश की तुलना में सर्वाधिक है। आज देश में 300 के आस–पास आदिवासी जमातियाँ देखी जाती हैं। भारत की जनसंख्या के कूल 8.08 प्रतिशत जनसंख्या आदिवासियों की है। अंकों में यह सख्या लगभग 10 करोड के आसपास है।

भारत की जंगलीय पर्वतीय, दुर्गम प्रदेशों में आदिवासियों के अस्तित्त्व को पाया जाता है। मूल निवासी के रूप में आज भी अपनी संस्कृति, परंपरा और सामाजिक नीति, नियमों का निर्वाह करते हुए वे जीवनयापन कर रहे हैं।

महाराष्ट्र में विद्वानों के मतानुसार आदिवासी उपजातियों की संख्या 47 के आस–पास मानी गई है। उन आदिवासी जमातियों में 'आंध' का अपना एक विशेष स्थान है। महाराष्ट्र के हिंगोली परभणी, नांदेड, यवतमाळ, अकोला तथा बुलढाणा आदि जिलों में तथा आंध्रप्रदेश के आदिलाबाद, निर्मल जिलों में उनको पाया जाता है।

'आंध' आदिवासी समाज में लोकसाहित्य के विभिन्न अंगों का दर्शन होता है। इन विविधमूखि धाराओं से परिचित होना आवश्यक है। इसलिए 'आंध' आदिवासी लोकसाहित्य के विविध रूप शिर्षक से शोधालेख प्रस्तुत है।

'आंध' आदिवासी लोकसाहित्य का निर्माण उनके रहन–सहन, खान–पान, आचार–विचार आदि जीवन पद्धतियों से हुआ है। प्रकृति के विभिन्न घटनाओं से ये परिचित है। प्रकृति की विभिन्न रूपों की झलक उनके साहित्य में दृष्टिगत होती है। इसलिए इन्हें प्रकृति पूजक भी कहा जाता है। 'आंध' के लोकसाहित्य का स्वरूप मौखिक है। 'आंध' आदिवासी लोकसाहित्य के विविध रूप इस प्रकार हैं – लोकगीत, लोककथा, लोकनृत्य, लोकसंगीत, लोककला, लोकनाट्य, लोकसुभाषित जैसे–मुहावरे, कहवतें, लोकोक्तियों आदि। उनकी जानकारी निम्नानुसार इस प्रकार है–

लोकगीत –

मराठवाडे के जिलों में 'आंध' आदिवासी समाज का अस्तित्व दिखाई देता है। इनका संबंध मराठी भाषा –भाषि समाज से आने के कारण वे अपनी बोलिभाषा भूल चूके हैं। आज इनके लोकगीतों की भाषा मराठी का ही ग्राम्य रूप है। लोकगीत मानव हृदय की वह नैसर्गिक अभिव्यक्ति हे, जिसमें भाव भाषा और छंद से मुक्त रहकर स्वच्छंद रूप से निःसृत होने लगते हैं। 'आंध' समाज में विभिन्न प्रकार के लोकगीत दृष्टिगत होते हैं। जैसे –संस्कार गीत, चक्की गीत, ईश्वर और धर्म गीत, खेती गीत, उत्सव गीत आदि।

1) संस्कार गीत –

'आंध' आदिवासी समाज में अनेक संस्कार किए जाते है। इन सभी संस्कारों में विवाह संस्कार महत्त्वपूर्ण माना जाता है। विवाह संस्कार के समय विभिन्न रस्में निभाई जाती है। उन रस्मों के समय गीत गाने की प्रथा दृष्टिगोचर होती है। हल्दी लगाते समय का एक गीत –

'हाळद चडयेली देवाया मारोतीला
नवऱ्या तानाजीला तेल लागलय बाई।
बेगडा बेगयडी सोन्याच्या छत्रीखाली
नवरा नवयरी, तेल लागलय बाई।''[1]
(संकलन)

2) चक्की का गीत –

'आंध' महिलाएँ सूबह के समय में अपने घर पर ही चक्की पर धान को पिसते हुए गुनगुनाती है। यह गीत उनके भावों की अभिव्यक्ति होती है। श्रम को मिटाने हेतु गीतों का गान आवश्यक बन जाता है।

'पाटच्या पाऱ्यामधी, कोण गेला छेडीवाला
माइया ग सोयऱ्यान गंध खाली सूरमा लेला।

पाटच्या पाऱ्यामधी सीताबाई कुकु लेई
सीताबाई कुकु लेई
जस नागेलीच पान, देल कुकावरी ध्यान
कपट्याव ग रावणान, कुकु भिजल घामान।''[2] (संकलन)

3) खेती गीत –

कृषिकर्म करते समय 'आंध किसान श्रम परिहार के समय गीत गाता है –
'दुरडयावरी दुरडया जाईल मनलं शेता
खाईन मनलं हूरडा
काढीन मनलं धुरडा माय व।
दुरडयावरी दुरडया, जाईल मनलं शेता
खाईन मनलं ओंब्या
खेळील मनलं झोंब्या माय व।
दुरडयावरी दुरडया, जाईल मनलं शेता
खाईन मनलं वाळक
फोडीन मनल टाळक, मनाला व्हता माय व।'[3] (राजेश धनजकर)
इस तरह अनेक प्रकार के गीतों का प्रचलन समय–समय पर होता है।

लोककथा –

'आंध' के लोकजीवन में लोककथाओं को महत्त्वपूर्ण स्थान है। 'आंध' समाज समुह में रहता है। उनके स्थानों को 'वाडी' या 'दरी' कहा जाता है। उनके यहाँ जब कोई मनोरंजन के साधन उपलब्ध नहीं होते तब बडे – बुजुर्ग आज भी छोटे बच्चों को कथा सुनाते हैं। उनकी कथाएँ अनेक प्रकार की होती हैं– 1) उत्पति परक 2) देवी – देवता 3) दंतकथा, 4) प्राणियों की कथा 5) अद्भूतकथा आदि। इन कथाओं का प्रभाव प्रत्यक्ष –अप्रत्यक्ष रूप में बच्चों के साथ आंध समाज पर भी होता है। हर कहानी की उनकी अपनी कल्पनाएँ होती हैं। देवी–देवताओं की लोककथाओं में निम्न प्रकार से कल्पनाएँ होती है–

1. ईश्वर का जय सैतान का पराजय
2. देवताओं का प्रकोप विधियों के माध्यम से नष्ट किया जाता है।
3. प्रकृति के सभी तत्त्वों की चिंता ईश्वर को होती है।
4. भगवान के नाम मन्नत मांगने से वे पूर्ति करते हैं।
5. भगवान हर घटक में होता है।
6. पशु–पक्षी तथा प्राणि मानव के साथ वार्तालाप करते है।
7. मंत्रोच्चार से संकट दूर होते है।

दंतकथाओं में भी कुछ कल्पनाएँ दृष्टिगत होती है। जैसे–

1. धन से भरी गागर होती है।
2. धन और व्यक्ति में संवाद होता है।
3. धन की रक्षा के लिए साँप, बिच्छू आदि जिवजंतू होते है।
4. अमावस की रात सैतान का संचार होता है।
5. धन व्यक्ति का बलिदान मांगता है।
6. इमली के पेड पर भूतों का वास होता है।

'इस तरह की कथाओं से 'आंध' व्यक्ति, समाज बंध जाता है। परंपरा से चली आ रही इन कथाओं को पीढी–दर–पीढी संक्रमित किया जा रहा है।

लोकनाट्य –

प्राचीन काल से ही 'आंध' समाज के मनोरंजन का साधन लोकनाट्य रहा है। आज भी समाज में दंडारण, कलापथक, जागरण, भजन किर्तन आदि लोकनाट्य का अविष्कार दृष्टिगत होता है। लोकनाट्य को परंपरागत स्वरूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसका स्वरूप मौखिक होता है। लोकनाट्य का स्वरूप निम्न होता है –

1. लोकनाटय का आरंभ गण से होता है।
2. लोकनाट्य का उद्भव धार्मिक उत्सव के माध्यम से हुआ है।
3. इसकी परंपरा मौखिक होती है।
4. लोकनृत्य को संगीत तथा नृत्य की साथ होती है।
5. रंगमंच साधारण होता है।
6. कथानक पौराणिक होता है।
7. सुत्रधार तथा विदुषक का सहभाग होता है।
8. भाषा का प्रयोग साधारण जनभाषा का होता है।

इस तरह दंडारण, कलापथक तथा जागरण के रूपों को आज भी सहजता से 'आंध' समाज के 'वाडी' और 'दरी' में देखा जाता है।

लोकसुभाषित (कहावतें) –

लोकसाहित्य का महत्त्वपूर्ण अंग लोकसुभाषित को माना जाता है। इन लोक सुभाषितों में मुहावरें कहावते, लोकोक्तियाँ प्रमुख हैं। 'आंध' समाज जीवनयापन करते समय वार्तालाप में कहावतों का प्रयोग सहजता से करता है। आज भी कहावतों को अनुभव के बलबुतों पर नापा जाता है। बुजुर्ग व्यक्ति, स्त्रीयाँ कहावतों का प्रयोग कदम–कदम पर करती हैं। 'आंध' समाज के कहावतों से उनके धार्मिक और सामाजिक जीवन दर्शन होते हैं। ''एखाद्या जातीच्या प्रवृत्ती, त्यांच्या सवयी आणि दैनंदिन व्यवहार हे सर्व न्याहाळून इतर लोक त्यांना म्हणीद्वारे नावे ठेवत असतात. ह्या प्रक्रियेतून भारतातील एकही जात सुटली नसावी असे दिसते''[4](राजेश धनकर)

जैसे – ''खेकडयाला नाही कान
अन आंधाला नाही ग्यान''[5] (राजेश धनकर)
इस प्रकार 'आंध' समाज को उपहासात्मक दृष्टि से देखा जाता है। पारिवारिक संबंधों का चित्रण भी कहावतों से स्पष्ट होता है–
'भाऊ बहिणीला आसावा
जुन्या चोळीला इसावा''[6] (राजेश धनकर)
विवाह संस्कार के समय मुलतः वधू अपने पति का नाम (उखाणा) लेती है–
''जांब देतो कापून, केळ देतो सोलून
Xxx च्या जीवासाठी कुकु लेतो कोरून।''[7]

इस तरह नववधू जीवन प्रसंग में आनेवाली मुसिबतों का निवारण वह सौभाग्य का रक्षण मांग भरकर करती है। 'आंध' आदिवासी समाज का लोकसाहित्य मौखिक परंपरा की धारा है। वह धारा आज भी पूरे समाज को एकसूत्र में बांधने का प्रयास कर रही है।

निष्कर्ष –

गोंड, कोलाम, भिल्ल, कोरकू, नागा, वारली, पावरा आदि आदिवासी जमातियों में 'आंध' का अपना एक विशेष स्थान है। संख्या और क्षेत्र में इनका आकार छोटा है, इसलिए अन्य समाज की तुलना में वे उपेक्षित है। फिर भी लोकसाहित्य की दृष्टि से इनका मौखिक साहित्य प्रचुर मात्रा में प्रचलित है। लोकसाहित्य की धारा विभिन्न अंगों के द्वारा प्रवाहित होती हुई लोकगीत लोककथा, लोककला, लोकनाट्य, लोकसुभाषित के द्वारा 'आंध' समाज 'दरी' और 'वाडी' में रहकर आज भी अपनी मर्यादाओं का पालन कर रहा है। रूढी और परंपरा का निर्वा करते हुए अपनी संस्कृति की पहचान लोकसाहित्य के विभिन्न अंगों के द्वारा प्रकट कर रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1.संकलन – कांताबाई तांबारे, बेल्लोरी (धानोरा), तहसिल–किनवट, जिला–नांदेड
2.संकलन – अनुसयाबाई भिसे, इरेगांवा, तहसिल–किनवट, जिला–नांदेड
3.राजेश धनजकर – आदिवासी आंधाची लोकगीते (प्रकाशन वर्ष–2011, साधना पब्लिकेशन्स, परभणी – 431401) पृ.64
4.राजेश धनजकर – मराठवाडयातील आंध जमातीचे लोकसाहित्य (प्रकाशन वर्ष–2013, अनुराधा पब्लिकेशन्स, नांदेड) पृ.336.
5.वही, पृ.336.
6.वही, पृ.336.
7.संकलन – वनीता झळके, पिंपरफोडी तहसिल –किनवट जिला – नांदेड

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org